भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 26 अंक : 4 | 15.7.2003 मंगलवार (जुलाई-अगस्त) | वार्षिक चंदा : 50.00

आया... रक्षाबंधन का पवित्र अवसर ?

रक्षाबंधन का परम पवित्र त्यौहार **12 अगस्त, मंगलवार** को आ रहा है। स्वामिनारायण संप्रदाय के मंदिरों में इस दिन गुरु अपने शिष्यों को 'रक्षा' के रूप में ही राखी बांधता है। हमारी आत्मा की रक्षा के लिए मन, बुद्धि, चित्त और अहम् की भयंकर माया से हमारी अखंड रक्षा करने हमें 'राखी' बांधते हैं...

भौतिक समृद्धि के बढ़ते हुए कलयुग में जीवमात्र स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहा है। केवल प्रभु रखे संत ही 'सच्ची रक्षा' का अभय वरदान दे सकते हैं, क्योंकि उन्हें हथेली पर पानी की बूंद की भांति चैतन्य का विकासक्रम सम्यक् दिखाई पड़ता है।

पर, यहां उनकी एक शर्त है। किसी का– अल्पसंबंधी का भी हम कभी अभाव-दोष लें ही नहीं ! सो, गुणातीत स्वरूपों के पास प्रार्थना करने का यह दिन है कि ऐसा 'कुसंग'–जो कि हमें सत्पुरुष से दूर ले जाता हो, उससे हमारी रक्षा करना। प.पू. काकाजी की परावाणी में हमने कई बार सुना कि 'दुनिया नहीं माने, मानव नहीं माने–पर तुम तो मानो...' लेकिन हमने प.पू. काकाजी की कही बातों पर गौर ही नहीं किया... सुनी-अनसुनी जैसी कर दी या तो ऐसा माना कि लीला कर रहे हैं... लाड़ लड़ा रहे हैं... स्मृति दे रहे हैं। और... उनके परामर्श को नज़रअंदाज करते रहे और हमारी वृत्तियों में झूलते रहे। पर... प.पू. काकाजी अभी भी प्रगट हैं और उसकी हमें अनेक बार प्रतीति भी हुई है। यदि हम सब अब भी उनकी कही बातों को लेकर चलने लगेंगे तो वे **अब भी** वे हमें हर प्रकार से सहायरूप होंगे। पेरिस से हम सब की फ़िकर करते हुए रक्षाबंधन निमित्त प.पू. काकाजी द्वारा लिखे निम्न पत्र के एक-एक शब्द को विचारें और हम से क्या करवाने की उनकी चाहना है उस ओर चलने अग्रसर बनें...

लगे अति प्यारा, दर्शन दिव्यता का

स्वामिश्रीजी
पेरिस
17.7.84

.....प्रभु की हाजिरी मान कर यदि काम करें तो डबल-दुगना आनंद और शक्ति मिले।

सो, मायिकभाव टाल कर अब तो शूरवीर होकर सीने पर वार लेना। हमें तो प.पू. बापा के कार्य की शोभा बढ़ानी है। हम पेरिस में तीन दिन का भजन रखने वाले हैं और सभी को रक्षाबंधन के आशीर्वाद दिए हैं। तो, निष्ठा की कील बहुत ही पक्की रखना, जिससे कि ज़रा भी हिले-डुले ही नहीं और ख़्वाब में भी किसी का तनिक भी अभाव आए ही नहीं। चुपके से प.पू. बापा सब कुछ ही देख रहे हैं। फिर किससे छुपाना रहा ? सो माँ व बालक का संबंध तो किया जा सकता है, जिससे कि हर प्रकार से रक्षा भी होती है। अब तो जगह-जगह **यह ज्ञान प्रमाणित होता जा रहा है।**

इटली में पक्का सेन्टर हुआ और पेरिस में भी होगा। सभी को खूब ही दिव्यभाव है। स्त्री-पुरुषभाव बाधारूप ही नहीं ! कैसा बड़ा आश्चर्य ? पू. बापा का कैसा प्रताप ! पू. भरतभाई ने यह नज़रोनज़र देख कर अनुभव किया है। पू. रमेशभाई और पू. बापू ने सिलोन में यह अनुभव किया

था। इसे प्रभु का ही कार्य माना जाए और वही प.पू. बापा का प्रगटपन !

इस बारे तुम वहां कु. माल्वीना बहन द्वारा भी पक्का विश्वास कर लेना। उसने तो 'स्वामिनारायण' मंत्र सच में ही सर्वोपरि मान लिया है। इतनी पैसे वाली बाई-कलाकार-खुद की कोठी और स्वतंत्र– तब भी खुद तुरंत रसोई बना कर खिलाए। मानो भगवान का थाल तैयार कर रही हो ! भरतभाई को पूछना और वहां खुद तसल्ली करना।

फिर भी, तुम लोगों की तो बात ही बिलकुल अलग पड़ जाती है; क्योंकि तुम सबने तो एकांतिक धर्म सिद्ध करने का संकल्प किया है ना ? यह बात कुछ और ही हो गई ! तुम्हारे दर्शन से उनका कल्याण व आत्यंतिक कल्याण होगा। तुम्हें ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म को अखंड धारने हैं। सो, और किसी का दोष ज़रा-सा भी देखना ही नहीं है; तो फिर बोलना तो कहां रहा ? बड़े पुरुष चला लेते हैं वह बात अलग है। परंतु प.पू. बापा को थोड़ा भी – यानि तनिक भी पसंद नहीं है। सो, टुक में क्या ? बस, इतना ही समझ कर दृढ़ संकल्प करके लग पड़ना। तुम्हें खूब बल मिलेगा। हम राजी, राजी, राजी हैं।

लि. आपके ही दादुकाका के हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण !

✡ ✡ ✡

'पप्पा योगीस्वरूप गुरुचरणे झुकी रहूं भाव थी' !

पहली सितम्बर....हम सब के लिए परम सौभाग्य का महामंगलकारी दिन ! समग्र गुणातीत समाज के प्राणाधार प.पू. पप्पाजी की जन्म जयंती !

ब्रह्म का साकार स्वरूप व परब्रह्म के समग्र ऐश्वर्य के धारक **गुरुहरि प.पू. पप्पाजी आज 87 साल की उम्र में हमें मानव में से महामानव की कोटि में ले जाने अविरत श्रम कर रहे हैं।**

जिनका जन्म व कर्म दिव्य है, उनके लीला-चरित्रों को दिल की सच्चाई से दिव्य मानने से जीव माया को तैर जाता है। जीवन में पल-पल उनका स्मरण और वचन में निरंतर वर्त कर नित्य नई रूचि रखना–वही सच्ची जयंती मनाई कही जाए। प.पू. पप्पाजी के जीवन को देख कर ऐसा ही लगता है जैसे कि गुणातीत पुरुषों को एक ही वासना है कि उनका आश्रित जल्दी से जल्दी परम भागवत संत बने।

उन्होंने योगी बापा की दासत्वभक्ति तन, मन, धन, आत्मा से करी। साथ ही संबंध में जो भी आए उनके जीवन के केन्द्र में भगवान व संत बसा दिए। स्वयं शून्यभाव में रह कर हमेशा स्वामीसेवकभाव से वर्तते हुए भी अपने वर्तन द्वारा कृपा करके स्वयं के स्वरूप की पहचान भी कराई। यूं स्वधर्म दृढ़ रख कर योगीजी महाराज के अंतर की रूचि जान कर उन्हें धारा और राजी करके दिव्य वारिसदार बने।

प.पू. पप्पाजी का धरती पर प्रगटीकरण-दिव्य अवतरण– हम सब पर महाराज की करूणा है। **उन्होंने जो भी ज्ञान हमारे लिए खुल्ला रखा है, वह सारा उनके दिव्य जीवन का निचोड़ है।** उनकी प्रत्येक क्रिया में दिव्यता का ही आभास महसूस होता है। जो भी संबंध में आएं उनके हृदय को सहज ही स्पर्श कर जाता है।

प.पू. पप्पाजी को एक बार एक मुक्त ने पूछा कि पप्पाजी ! आपको कभी भी चिंता नहीं होती ? प.पू. पप्पाजी सहज बोले– चिंता ? 'योगी के संकल्प से सब साधना करने आए हैं और योगी का सकंल्प ही काम करने वाला है'– इस बात का मुझे पक्का विश्वास है, सो चिंता क्यों हो ? और यह बात आप सब के भीतर में भी दृढ़ बैठ जाए इसलिए मैं तुम सबको भी यही कहता हूँ कि संजीवनी मंत्र के पहले मुद्दे के मुताबिक **अखंड प्राप्ति की मस्ती में रहा करो।**

श्रीजी महाराज ने गुरु रामानंदस्वामी से मांगा था कि आपके भक्तों का दुःख मुझे देना, पर आपके भक्त दुःखी ना हों। उसी परंपरा से आज प.पू. पप्पाजी ने अभी पिछले दिनों खूब बीमारी ग्रहण करी थी। डाक्टरों ने बहुत चिंताजनक हालत ज़ाहिर कर दी... एक ओर विज्ञान और दूसरी ओर भक्ति... दोनों के बीच जबरदस्त संघर्ष काफी दिन चला। डॉ. नीलम सभी को बार-बार एक ही बात कहते– भजन का जोर बढ़ाओ। **श्रद्धा और अडिग विश्वास की नींव पर 'ज्योत' की बहनों के द्वारा तीव्रता से किये भजन ने भगवान को मानो हिला दिए।** कई कितनी बहनों ने तो भीष्ण गर्मी में निर्जला व्रत भी रखे। आखिर भक्ति की ही जीत हुई और प्रभु ने **अन्यथा कर्तुंशक्ति** का अनुभव करा कर डॉक्टरों तक को आश्चर्य में डाल दिया... आप्रेशन करना नहीं पड़ा और दुःख के बादल मानो सहज ही छट जैसे गए !

ज्ञानी, ध्यानी, प्रेमी एवं विश्वासु–सभी भक्तों को भीतर में अनुभूति हुई कि **प.पू. पप्पाजी हमारे जैसे दिखाई जरूर पड़ते हैं, पर गोकुल गाँव का यह पिंड न्यारा ही है !**

दूसरी ओर बीमारी को यूं धकेल देने का प.पू. पप्पाजी का जेस्चर यह भी स्पष्ट करता है कि जिस प्रकार वे एक पल में इस बीमारी को हटा सकते हैं, वैसे ही अगर हम केवल उनकी ओर नज़र रख कर दिव्यभाव व निर्दोषबुद्धि के सिद्धांत को लेकर दिल की सच्चाई से तीव्र प्रार्थना करेंगे, तो वे हमें स्वभाव-प्रकृति से मुक्ति भी दिला देंगे।

आइए, 1975 में प.पू. पप्पाजी की जन्मजयंती निमित्त लिखे उनके जीवन कार्य को पढ़ कर मनन-चिंतन करें और प्रार्थना करें कि हमारा मन हमेशा आपके दिव्य चरित्रों में– प्रभु में अखंड लयलीन रहे। हमारा समग्र तंत्र आपकी व भक्तों की भक्ति करने ही पल-पल तत्पर बना रहे।

प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी खूब ही छोटे थे तब से उन्होंने पृथ्वी पर स्वर्ग उतारने का संकल्प किया था। बचपन से ही दोनों भाईयों का एक ध्येय था कि जीवन के पल-पल में प्रभुता प्रगट करनी है। प.पू. पप्पाजी छोटी उम्र से ही तटस्थ विचारधारा रखते थे। 18 वर्ष की छोटी आयु में अपने परिवारजनों को सुखी करने की भावना से मोम्बासा (अफ्रीका) गए। वहां वे अपना अधिक समय तो प्रभु प्रार्थना के लिए ध्यान में ही बिताते थे। प.पू. पप्पाजी बापा के चैतन्यशुद्धि का दिव्य कार्य करने के लिए ही प्रगट हुए होंगे। सो, जैसे ही बापा का साम्राज्य आया **बापा ने** उन्हें खींच लिया और भारत में लाकर रख दिया। **'किसी का देखना नहीं और एग्री (कंपनी) में प.पू. काकाजी के साथ काम करो'–ऐसी आज्ञा दी** व साथोसाथ बहनों को भगवान भजवाने का भगीरथ कार्य सौंपा।

बापा को ब्रह्म-परब्रह्म का साकार स्वरूप मान कर जीवन की प्रत्येक पल वे जीए हैं। उसमें कभी भी किसी भी प्रकार की अमहिमा या मनुष्यभाव का विचार तक भी उठने नहीं दिया और बापा के अल्प संबंध वालों में भी अपार दिव्यभाव रख कर सेवा कर ली। मुंबई में कोठारी की हैसियत में स्पष्टता, चौकसी और लगन से एकाउन्ट्स की सेवा करी। उत्सवों में जाते या बापा जब मुंबई पधारते तब सारी व्यवस्था करते और साथ में **संतों हरिभक्तों की समधी व दामाद की भांति खूब अच्छी तरह खातिर करते-कराते।** बापा ने **बहनों व संतों की** उन्हें जो **सेवा** सौंपी, वह सही अर्थ में **उद्धवजी जैसी अपरंपार महिमा की दृष्टि से उठा ली। उसमें ही परमपद माना और उनके संबंध में आए सभी को मनवाया है।**

संतों, बहनों व युवकों को उनसे एक विशेष अपना निजी संबंध रहा है। इनके पास सभी को स्वजन जैसा अपनापन महसूस होता है। संबंध में आए हर एक जीवन में रस लेकर निर्दोषभाव करा देते हैं और फिर समग्र ब्रह्मसमाज की महिमा समझा कर, सेवा करा कर दिव्य रूपांतर के मार्ग पर अग्रसर कर देते हैं। स्वरूपनिष्ठा की दृढ़ता पर ही प्राप्ति का आधार है यह निष्ठा करनी और करानी–यही बापा का कार्य करके इन्होंने बापा का वारसा संभाला है।

एक दिव्य विभूति की भांति साधक के जीवन में वे कैसा कार्य करते हैं वह एक साधक के शब्दों में ही पढ़ें :

इनकी अविरत अमृतधारा, केवल जीव को ही निहारती दिव्य दृष्टि, आमंत्रण या सत्कार की राह देखे बिना हमारी अनंत रुचियों के ढेर में से भगवान भजने की एक छोटी-सी रुचि को खूब बड़ी मान कर–अतिकृपा करके, जगह बना कर वे जीव में बैठ गए। जीव को कहां पता था कि निश्चयरूपी गर्भ बापा भीतर में रख गए हैं ! यह निश्चय ही धीरे-धीरे मायिकभाव में से दिव्यभाव की ओर खींचता चला गया। प्रारब्ध की परवाह किए बिना जीव के लिए जरुरी जोग– संजोग वे बनाते गए और शुद्धिकरण होते-होते हमने उनकी असीम धीरज, कार्य कौशल्य, हिमालय जैसी अडिगता और अखूट निश्चिंतता का दर्शन किया। अधिक रसिकभाव दिखाने के बावजूद भीतर में रही उनकी निर्लेपता, निःस्पृहीभाव, निःस्पंदनता, निर्हेतुकी भक्ति, निर्व्याज प्रेम हमने देखा है। आज जब मूर्ति में रह कर कार्य करने की हम कोशिश कर रहे हैं तब उनकी प्रतिभाशक्ति का पल-पल स्मरण हुआ करता है। मूर्ति में रह कर क्रिया करने की सावधानी या कोशिश में से हम जब बार-बार चूक जाते हैं, तब एक विचार आ जाता है... अहो ! इन्होंने तो कितनी स्वाधीनता से-निडरता से जीव को पकड़ा है ?

हम तो हमारी रीत से जो वर्तें उन पर ही प्रसन्नता की बौछार करें। जबकि उन्होंने हम में क्या देखा ? गरज में गड्डे, श्रद्धा में सूखे, विश्वास में दिक्कत, देवताओं से गठबंधन, भजन में झीरो, बुद्धि के बैल, उत्साह में उजाड़ता ! जिस ओर भी इन्होंने देखा होगा वहां हम में सूखे रेगिस्तान की तपती हवाएं ही आकर उनकी आँखों से टकराई होंगी ! आज उनकी क्या महिमा गाएं ? शब्द मिलते नहीं। इतना ही कह सकते हैं कि हमारे छल-कपट, उलाहने, बड़बड़ाहट को गिने बिना हमारे द्वारा दिए धावों के बदले में बल देकर हमें हल्के फूल कर दिए। धन्य है तुम्हें ! वाह-वाह-वाह ! यह तो है बीत गए कल तक का एक इतिहास....

अब आज की बात टटोलें तो भीतर में अहोनिश ऐसा रहता है कि महाराज ! यह जोग ना मिला होता तो हमारा क्या होता ?... हमें सुखी कर दिए ! प्राप्ति की परिपूर्णता के साथ हमें दृष्टि की एक निर्मलता और विशालता बख़्शिश में दे दी। आपने देने में कोई कसर नहीं रखी। पर अब चौबीस घंटे अखंड आपकी तरह आनंद में रहते कर दीजिए। बस फिर बोलना महाराजस्वामी, सुनना महाराजस्वामी, देखना महाराजस्वामी ! मैं कौन ? महाराजस्वामी ! तू कौन ? महाराजस्वामी ! वो कौन ? महाराजस्वामी ! बस महाराजस्वामी ! और कुछ रहे ही नहीं ऐसा बना दीजिए... ऐसा एक समृद्ध सत्संगी जीवन जीने का बल, बुद्धि वे हम सब को बख़्शे ऐसी महाराज और स्वामी के चरणार्विंद में इस मंगलकारी दिन पर अंतर की प्रार्थना !

✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ

दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, अमदावाद, मुंबई, वडोदरा आदि में प.पू. गुरुजी से जुड़े हरिभक्त हर साल **मई** महीने में होती जपयज्ञ 'अनुष्ठान शिविर' की बेसब्री से राह देखते रहते हैं। आध्यात्मिक, मानसिक, व्यावहारिक उलझनों की गुत्थीयाँ सुलझाने वाली वह शिविर की दिल्ली–अशोकविहार स्थित अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर में 11 मई 2003 रविवार को प.पू. गुरुजी के भागवती दीक्षा दिन की सुप्रभात से शुरु हुई और 12 जून प.पू. काकाजी महाराज की जन्म जयंती के महामंगलकारी दिन इस की पूर्णाहुति हुई।

प.पू. गुरुजी पिछले 12 साल से निरंतर इस महीने के लिए परिश्रम लेते हैं। पर इस साल तो पौने छः व छः के बीच नित्यविधि करके, निजी पूजा करके तैयार होकर ऊपर ठाकुरजी के हॉल में पहुँच जाते और मुंबई-ताड़देव से निकली प.पू. काकाजी महाराज के भजनों की कैसेट 'तू रहे सदा मारी यादमां' सुनते... प.पू. गुरुजी को हमारे आने की राह में बैठे देख कर सब हरिभक्तों की आँखें नम हो जाती कि आज 66 वर्ष की आयु में प.पू. गुरुजी हम सब के लिए कैसे गरजु बन कर बैठ जाते हैं ? साधु के पास गरज हमें रखनी चाहिए, उसकी बजाय वे गरज रखते हैं। ऐसे गुरु का ऋण हम कैसे चुका पाएंगे ?

11 मई रविवार की सुबह सभी मुक्त इक्ट्ठे हो गए... स्विटज़रलैण्ड से आए **नवाब अली खान साहेब** 30 मार्च के उत्सव दौरान सिर्फ एक बार ही प.पू. गुरुजी से मिले थे। लेकिन प्रथम दर्शन में ही जैसे प.पू. गुरुजी उनकी चित्तपट्टी पर बैठ गए ! वे इस दिन दोबारा खास प.पू. गुरुजी के दर्शन हेतु भारत आए। प.भ. अनुज दुरेजाजी के व्यापारी मित्र **प.भ. अरूण गुप्तो (बंगाली)** जर्मनी से व्यापार के सिलसिले में भारत आए थे, पर प.पू. गुरुजी की प्रतिभा, सादगी, साधुता से इतने प्रभावित हुए कि वे पाँच-छः दिन कोलकत्ता से आए अपने परिवार के साथ मंदिर में ही रहे और अन्य व्यापारियों को भी मंदिर में ही मिलने के लिए बुलाया कि–**'मुझे प.पू. गुरुजी को छोड़ कर कहीं बाहर जाना नहीं है। जितने दिन मैं यहां हूँ, प.पू. गुरुजी के पास ही रहूँगा...'**

सो, स्विटज़रलैण्ड से आए प.भ. खान साहेब, प.भ. अरूण गुप्तोजी, प.भ. राकेश गुप्ताजी, प.भ. बलराम गुप्ताजी एवं पंजाब से आए प.भ. दलजीतसिंहजी–इन पाँच भक्तों ने दीप प्रज्ज्वलित करके इस अनुष्ठान शिविर का उद्घाटन किया।

इस शिविर का लाभ लेने के लिए वडोदरा से प.पू. काकाजी के भतीजे **पू. वीनूकाका** एवं **प.भ. राजुभाई परिख** खास 15 दिन के लिए एक महीने के अंतराल में ही दोबारा दिल्ली आए। **शिविर का सारा दिव्य माहौल देख कर वे बोल उठे कि अगले साल से पूरे महीने के लिए इस धून्य में आएंगे...**

प.पू. गुरुजी का भागवती दीक्षा दिन होने के कारण **प.भ. विनोदभाई ठक्कर** ने ठाकुरजी का पूजन करके प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। शिविर की शुरुआत निमित्त सभा को प.भ. खान साहेब ने संबोधित किया और स्विटज़रलैण्ड में रहते अन्य मुमुक्षुओं के कल्याण हेतु प.पू. गुरुजी को वहां आने प्रार्थना करी। इसी प्रकार प.भ. अरूण गुप्तोजी ने भी जर्मनी आने का विशेष आग्रह किया।

अनुष्ठान शिविर की शुरुआत करवा कर प.पू. गुरुजी इसी दिन शाम की फ्लाईट से अमदावाद प.पू. पप्पाजी की तबियत देखने गए और 12 की रात को तो वापिस दिल्ली लौटे।

प.पू. काकाजी महाराज की परावाणी एवं उनके द्वारा दिए गए रहस्य– जो कि प.पू. गुरुजी ने खूब खोल कर समझाए व रोज़मर्रा की बारीक-बारीक उलझनें हँसी-खेल में बता कर समझाईं, उससे दूर-सुदूर के हरिभक्त भी 'भगवत् कृपा' के **'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'** शीर्षक के अर्न्तगत प्राप्त कर सकें, इस मंगल भावना से निचोड़ रुप देने का निम्न प्रयास है....

'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'

* हम सब पूर्व के-अक्षरधाम के मुक्त ही हैं, पर अपनी कसर टालने के लिए आए हैं। अगर हम यह निशान सत्संग में लेकर चलेंगे तो व्यावहारिक, मानसिक, आध्यात्मिक कोई भी दुःख रहेगा नहीं। सुखी-सुखी हो जाएंगे।
* सालों पहले 'गुणातीत ज्योत' की बहनों ने एक भजन में लिखा था...
  'बोलीए के मानीए तेने दे झीरो मारक,
  वर्ते के रुचि राखे, एने करे मूर्तिधारक...'
  अर्थात् कई बार हम खाली महिमा के शब्द बोलते हैं... कई बार मानते भी हैं। फिर भी हमें झीरो मार्क मिलेगा, पर जब वर्तने लगेंगे या उस रास्ते सच्चाई से चलने की रुचि पकड़े रखेंगे तब प्रभु हमें मूर्तिधारक बना देंगे...
* हम कई बार रोष में बोलते हैं कि– 'कुछ होने वाला नहीं है। हमारा तो कुछ हुआ नहीं वगैरह-वगैरह।' पर हम अपने दिल में झाँक कर देखें कि हम प.पू. काकाजी के बताए रास्ते पर अब तक चले हैं क्या ? मूल अक्षरमूर्ति

गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है कि हमें खाना मिल भी जाए, पर जब तक खाएंगे नहीं, तब तक भूख नहीं जाएगी।

* कोई भी घटना बने तब बस संत की स्मृति सहित 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप... तो देखना प्रभु तुरंत कहीं से भी प्रवेश होकर हमारी रक्षा कर ही देते हैं....
* हम अपनी लाईकिंग, इज़्म, मन, अहम् के कारण ऐन मौके पर संत को कह देते हैं कि इतना तो मेरे से नहीं हो पाएगा।
* प.पू. काकाजी बार-बार कहते कि अब हम सिर्फ सुने नहीं, स्वीकारें नहीं– बल्कि वर्तने लगें... **इस साल 'अनुष्ठान शिविर' में हम यह निश्चय दृढ़ करें।**
* प्रगट प्रभु के संबंध वाले मुक्तों की उनके स्वभाव देखे बिना, महिमा समझ कर सेवा कर लेंगे तो हमारे स्वभाव ऑटोमेटिक टल जाएंगे... करोड़ों साल की तपस्या के बाद भी ऋषि-मुनियों के जो टल नहीं पाए ! इतिहास साक्षी है कि किसी ने कुछ कह दिया, तो उन्होंने क्रोध के कारण श्राप दे दिया। थोड़ी किसी ने खुशामद कर दी तो खुश होकर वरदान बख़्शिश में दे दिया। ये स्वभाव ही कहे जाएं।
* भगवान रखे सच्चे साधु की तुम कितनी ही तारीफ करो या दूसरी ओर उसे गालियाँ भी दो तो वह इससे खुश या नाराज़ कभी नहीं होता।
* केवल बाहर वालों के साथ ही नहीं, बल्कि जहां हम रहते हैं वहां भी गरजु बन कर अनरीज़र्वेडली सुहृद्भाव रखेंगे तो प.पू. काकाजी की आंतरिक प्रसन्नता पाएंगे। हमारी सब की गाड़ियाँ यहीं अटकी हैं।
* जो हमारा चहेता हो, हमारी हाँ में हाँ करता रहता हो, जो हमारे मेन्टल फ्रेम वर्क में आ जाता हो, उसके साथ हमारी बनेगी ही। पर, जैसे कि प.पू. काकाजी कहते थे कि विरोध प्रकृति वाले के साथ–जो हमारा विरोध करता हो, अंदर-अंदर हमारी बुराई करता हो, हमसे चिड़चिड़ा व्यवहार करता रहता हो-पंगे लेता रहता हो– ऐसे संबंध वाले के साथ संबंध की महिमा समझ कर मिलजुल कर रहेंगे तो हमें खूब फायदा होगा।
* हम दावा तो करते हैं कि हमें प.पू. काकाजी के प्रति लगाव है। पर, उनकी कही बातों पर चलते नहीं...अगर चलेंगे तो फायदा तो हमें ही होने वाला है। पू. काकाजी के शरीर छोड़ने के 12-13 साल के बाद भी इस रास्ते नहीं चले तो फिर कब चलेंगे ?
* अब पक्का ही कर लें कि जहां हमारी नहीं बनती है, उसी के साथ ही मेलमिलाप करके रहना है... उसी के साथ जोड़ करके मुझे रहना है। हम कोई भी सजेशन लेकर जाएं और वह मना कर दे–हमारी बात काट ही दे, उसी के साथ मेल करना है... ऐसा करें–वो हम सच में प.पू. काकाजी के कहे जाएं...

  यह एक महिने की शिविर इसलिए है कि हम तीव्र भजन करके प्रार्थना करें कि हे महाराज हमें बल दो कि इस रास्ते चल कर हम हमेशा के सुखी हो जाएं।
* एक महीना प.पू. काकाजी की बातें सुनेंगे, पर अब उस पर अमल करें... ये पक्का ही कर दें कि जहां हमारी नहीं बनती है जिसके साथ हमारा मेल नहीं बैठता है उसी को ही गले लगा कर–साथ में लेकर रहना है। ये करेंगे तो ट्रीमेन्डस चेईन्ज अपने अंदर ही नहीं, बल्कि सारे माहौल में आ जाएगा और यही कहा जाए हमारा प.पू. काकाजी के प्रति लगाव ! वर्ना तो ढकोसलेबाजी है !
* हम भजन जरूर करते हैं; पर मन में एक छुपा नास्तिकभाव रहता है कि हमने भजन तो किया है लेकिन पता नहीं– प्रभु सुनेंगे या नहीं ? 'हमारा भजन प्रभु सुनेंगे ही'– यह विश्वास नहीं रहता।

  यह शिविर इसलिए भी है कि हमें इतना पक्का विश्वास तो होना ही चाहिए कि– 'मेंने प्रार्थना करी है वह मेरे प्रभु ने सुनी ही है और जैसा मेरे हित में होगा वैसा वे जरुर कर देंगे।'
* हमें भेड़चाल नहीं चलनी... क्योंकि हमारा ज्ञान सचोट है, हमारे प्रभु मानवस्वरूप में प्रगट हैं और हमारी प्रार्थना सुनते ही हैं... पर हमारी श्रद्धा नास्तिकभाव से मिश्रित है।
* हमें साधु जो कहता है वह हम करते नहीं हैं। उसकी बात नहीं मानने के लिए छोटे-छोटे एक्सक्यूज़ीस निकालते हैं। **सालों तक भी ऐसी शिविरें करते रहेंगे, पर यदि हम साधु के कहने पर चलेंगे नहीं तो हम ऐसे के ऐसे ही रहेंगे और फिर कहते फिरेंगे कि 'कुछ होता नहीं... बस बड़ी-बड़ी बातें हैं' इत्यादि।**

  प.पू. काकाजी ने एक ही बात पर खूब जोर दिया– 'जोड़ करके काम करो... जोड़ करके काम करो।' पर क्या हमने माना ? **जिसके साथ जोड़ करने हमें कहा होगा, वहीं तो हमारी ठन जाती है।**
* प.पू. काकाजी जैसी विभूति के साथ का संबंध हुआ वही अपनी सबसे बड़ी दौलत है। वह संबंध क्या ? उसकी हाँ से हाँ और उसकी ना से ना। उसकी मर्जी के मुताबिक चला करेंगे तो कोंककर्ड स्पीड से नहीं, बल्कि मिसाईल स्पीड से हमारी प्रोग्रेस होगी।
* अपना मन छोड़ कर हमें मुक्तों में लीन होना है, जबकि हम अपने मन में ही लीन रहते हैं।

* संत को हाजराहजुर मान कर नहीं जीते। इसलिए मन के चक्कर में फंस कर मन से व्यभिचार कर लेते हैं।
  मन से व्यभिचार यानि क्या ? **संत से लॉयल ना रह कर– संत की हाज़िरी ना मान कर मन के मुताबिक करने लगें– वह मन का व्यभिचार ! संत के संग ना रह कर मन के संग रहें– वह मन का व्यभिचार !**
* जैसे शरीर के लिए हवा की जरुरत है, वैसे ही हमारी चेतना के विकास के लिए सत्संग की जरुरत है। **वो सत्संग यानि– 'सत्पुरुष'** ! संत के साथ का संबंध ! **संत सही और मैं गलत !**
* हम सुबह जपयज्ञ करते हैं। प.पू. काकाजी की परावाणी में आया कि वह 'ग्यारहमुखी शंख' बजाया। ग्यारहमुखी शंख यानि–ग्यारह स्वरूपों को याद करके स्वामिनारायण मंत्र का जाप... हमारे सारे काम बनते जाएंगे।
* किसी के कुछ कहने पर हम किसी को इरिटेट होकर जवाब देने की बजाय **पीछे हठ करके भजन करेंगे, तो हमें जैसा चाहिए उससे भी कई गुणा अच्छी तरह बना करके प्रभु हमें दे देंगे।** पर यहां हमें धीरज रखनी पड़ती है। हम यह आजमा कर तो देखें।
* असल में **हमें सत्संग करना नहीं है, पर उसका दिखावा करना है कि हम सत्संग करते हैं।**

✡ ✡ ✡

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 25.7.2003, शुक्रवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 8.8.2003, शुक्रवार – पवित्रा एकादशी, व्रत–ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने
(3) **दि. 12.8.2003, मंगलवार – श्रावणी पूर्णिमा–राखी**

(सुबह 7:00 से 9:00 प.पू. गुरुजी की निश्रा में सच्चा रक्षाकवच प्राप्त करने प्रार्थना करेंगे। जो इस समय पर ना आ पाएं, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'राखी' बंधवा सकेंगे।)

(4) दि. 15.8.2003, शुक्रवार – भारत का स्वातंत्र्य दिन
(5) दि. 17.8.2003, रविवार – नाग पंचमी
(6) दि. 18.8.2003, सोमवार – रांधण छठ (षष्ठी)
(7) दि. 19.8.2003, मंगलवार – शीतला सातम (सप्तमी)
(8) दि. 20.8.2003, बुधवार – जन्माष्टमी, व्रत
(9) दि. 23.8.2003, शनिवार – एकादशी, व्रत
(10) दि. 31.8.2003, रविवार – गणेश चतुर्थी
(11) **दि. 1.9.2003, सोमवार – प्र.ब्र. स्व. प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन**
(12) दि. 6.9.2003, शनिवार – जलझीलनी एकादशी, व्रत
(13) दि. 7.9.2003, रविवार – वामन जयंती
(14) दि. 9.9.2003, मंगलवार – अनंत चतुर्दशी–गणेशविर्सजन
(15) दि. 14.9.2003, रविवार – ब्र. स्व. शास्त्रीजी महाराज – श्राद्ध तिथि

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327, 2724 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi

TO,